एसोसिएशन ऑफ रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट ऑफ इंडिया एआरओआई के 42वें राष्ट्रीय सम्मेलन में माननीय अध्यक्ष का संबोधन

आज के 42वें सेमिनार में इस संस्था के अध्यक्ष राजेश वशिष्ठ जी और जिन्होंने लंबे समय तक रेडिएशन में लगातार काम किया, एस.ए. केटिक भौमिक जी, मनोज गुप्ता जी, जी.वी. गिरी जी, वी. श्रीनिवासन जी, मनीष जी, इस संस्था के ऑर्गेनाजर सैक्रेट्री मनीष पांडे जी, मैं सबसे पहले एसोसिएशन ऑफ रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट ऑफ इंडिया के 42वें वार्षिक सम्मेलन में पधारे सभी चिकित्सकगण, सभी विद्यार्थीगण, जो इस विषय में एमडी कर रहे हैं, का स्वागत करता हूं।

यह एसोसिएशन पिछले चार दशक से लगातार रेडियोलॉजी शिक्षण में, क्लीनिक प्रेक्टिस में अपने समर्थ महाअनुकरणकों को उच्चतम स्तर पर पहुंचाने के लिए लगातार समय-समय पर सेमिनारों के माध्यम से, चर्चा और संवाद के माध्यम से, किस तरीके से हम देश के अंदर कैंसर का बेहतर इलाज कर सकते हैं, एक समग्र दृष्टिकोण इस क्षेत्र के सभी विशेषज्ञों की राय और समग्र दृष्टिकोण सरकार को दे ताकि जो सरकार की पॉलिसी है, एक स्टेज पर कैंसर की जितनी ऑर्गेनाइजेशन हैं, उनके सुझावों को ला सके और इसके लिए लगातार यह संस्था प्रयास कर रही है।

इस एसोसिएशन में 4500 से ज्यादा सदस्य लगातार सक्रिय रूप से अपनी भागीदारी निभा रहे हैं और लगातार अपनी चर्चा और संवाद, नए इनोवेशन, नई रिसर्च और बदलती हुई आर्टिफिशियल टेक्नोलॉजी और जो भी ज्ञान का अनुभव किया है, उस अनुभव को साझा करना, विचार-विमर्श करना, दुनिया के अन्य देशों से, जहां इस विषय पर बेहतर रिसर्च हुई है, नए इनोवेशन हुए हैं, उनके अनुभवों को साझा करें ताकि हमारे पास आने वाले मरीजों का बेहतर इलाज करके कैंसर जैसी महामारी से स्वस्थ कर सकें। आप चार दिन तक इन सारे विषयों पर चर्चा करेंगे, संवाद करेंगे और नई बदलती परिस्थितियों के अंदर मेडिकल साइंस में जो नए परिवर्तन हुए हैं, रेडिएशन टेक्नोलॉजी में नए परिवर्तन

हुए हैं, आपस में साझा करके एक नई दिशा, एक समग्र दृष्टिकोण देंगे ताकि हम कैंसर पर नियंत्रण कर सकें और पोस्ट केयर कर सकें। आपने उन सारे कैंसर पेशंट्स को भी बुलाया है, उनके अनुभव साझा किए हैं और उन पेशंट्स के माध्यम से समाज में एक दृष्टिकोण दे रहे हैं कि कैंसर से डरना नहीं है, निराश नहीं होना है, लड़ना है और लड़कर जीतना है।

मुझे लगता है कि आज मेरे सामने जो विद्यार्थी बैठे हैं, वे इसी दृष्टिकोण से विचार कर रहे हैं कि एक समय आएगा जब हम कैंसर पर नियंत्रण कर लेंगे और कोई बीमारी हुई भी तो उस व्यक्ति को सकुशल और स्वस्थ कर देंगे। यह हमारे नौजवान विद्यार्थियों की सोच और विचार है। मुझे आशा है कि इस चुनौती का अपने बौद्धिक सामर्थ्य से, नई टेक्नोलॉजी, नई रिसर्च और नए इनोवेशन से बदलती परिस्थिति में सामाना करेंगे। जब दुनिया एक हो गई थी, उस समय जहां भी इस क्षेत्र में बेहतर रिसर्च हुई, उसे मेरे नौजवान अनुभव करेंगे, साझा करेंगे। मैं यू.एस. गया था, मैंने देखा कि भारत के विद्यार्थी वहां किस तरीके से कैंसर की नई बीमारियों पर रिसर्च कर रहे हैं। उनकी सोच है कि एक दिन हम इस कैंसर की बीमारी पर नियंत्रण कर पाएंगे और बेहतर इलाज कर पाएंगे। हर चुनौती से लड़ने का सामर्थ्य और शक्ति भारत के नौजवानों में है। हर चुनौती का समाधान हमारे पास है।

इसी दृष्टिकोण से भारत आगे बढ़ रहा है। दुनिया और वैश्विक स्तर पर जो चुनौतियां होंगी, उन चुनौतियों का समाधान भारत से निकले, यह सामर्थ्य हमारे नौजवानों में है। दुनिया के अन्य देशों में कैंसर की महामारी तेजी से फैल रही है। मैं देख रहा हूं कि भारत में लगातार कैंसर के मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है। यह हम सबके लिए चिंता का विषय है। कई राज्यों में जिस तरीके से कैंसर बढ़ रहा है, वह हम सबके लिए चुनौती है। इन चुनौतियों के साथ हम बेहतर इलाज का भी इनोवेशन कर रहे हैं। खानपान, रहन-सहन, दिनचर्या में फर्टीलाइजर्स और अन्य चीजों का उपयोग आदि कैंसर के कई कारण हैं और इन कारणों को आप बेहतर तरीके से जानते हैं क्योंकि आप इसविषय पर अध्ययन, अध्यापन और रिसर्च कर रहे हैं। अब सामान्य दिनचर्या की बात आती है। कैंसर के होने का प्रमुख

कारण तंबाकू भी है और विशेष रूप से खानपान भी है। यह सेमिनार केवल आपके लिए नहीं बल्कि पूरे देश के लिए है। आप देश की जनता को कैंसर रोकने के लिए और कैंसर होने के कारणों का एक व्यापक दृष्टिकोण देने का काम करेंगे।

आप देश के हर व्यक्ति को सजग और सतर्क करें, ताकि वह अपनी जीवन शैली में परितर्वन ला सके। यदि वह ध्रूमपान का अत्यधिक सेवन कर रहा है, तो उस पर भी नियंत्रण कर सके। इसके लिए आपके प्रयास लगातार जारी हैं। अभी मुझे डॉ.राजेश वशिष्ठ बता रहे थे, उनकी चिंता भी वाजिब है कि एक मरीज को कैंसर होने के बाद इलाज कराने के लिए उसको बहुत दूर तक जाना पड़ता है। एक तो कैंसर से लड़ना, दूसरा गरीबी के हालात, व्यापार करना, उद्योग चलाना, छोटा व्यापार करना, छोटी नौकरी करना, आर्थिक रूप से कमजोर हालात, लंबे समय तक कैंसर का इलाज और फिर अस्पताल की ज्यादा दूरी, इसके बारे में डॉ.राजेश बड़ी चिंता कर रहे थे। हमारे मार्गदर्शक मंडल के डॉक्टर भी कह रहे थे कि अस्पताल बहुत दूर होने के कारण मरीजों को बहुत तरह की परेशानी आती है। उनका दृष्टिकोण अच्छा है कि उन्होंने डॉक्टरों की नहीं बल्कि एक मरीज की तकलीफ को समझा है, एक मरीज की परेशानी को समझा है। क्योंकि, जब उनसे आकर कोई मरीज मिलता है, तो वे उसके आर्थिक हालात को जानते हैं कि वह किस तरह से अपने परिवार को चलाता और इलाज करवाता है। उसको दो-दो स्थानों पर और दो-दो मोर्चों पर लड़ाई लड़नी पड़ती है। इसलिए, वे उसकी तकलीफ को जानते हैं। सरकार भी इसके लिए गंभीरता से प्रयास कर रही है। सरकार कोशिश कर रही है कि हर मेडिकल कॉलेज के अंदर उसके इलाज के लिए बेहतर मशीन लगे। इसमें इलाज का जो सबसे बड़ा पार्ट है, वह आप और बेहतर मशीन है। जितनी बेहतर और आधुनिक मशीन होगी, उतना ही बेहतर आप इलाज कर पाएंगे। हर डॉक्टर की यह मंशा और भाव रहता है कि यद ि मेरे पास कोई पेशेंट आए तो हम उसको स्वस्थ करके भेजें। यही एक ऐसा पेशा है, जहां पर मरीज की चिंता की जाती है और जितनी भी अपनी शिक्षा और सुलभ रिसर्च है, उसका उपयोग करते हुए मरीज को स्वस्थ करने के

लिए भरपूर प्रयास किया जाता है। यह हमारे हिन्दुस्तान के डॉक्टरों की नैतिकता है। इसी नैतिकता के कारण समाज में उनका सम्मान भी है। यह नैतिकता हमेशा बनी रहे। हम सब रेडिएशन की नई थेरेपी का उपयोग करें, ताकि कोई साइड इफेक्ट न हो। मैंने रेडिएशन की पुरानी मशीनों को भी देखा है कि किस तरीके के उसके साइड इफेक्ट्स होते हैं। मैंने नई मशीनों को भी देखा है, उनके कम साइड इफेक्ट्स हैं। हम बेहतर इलाज कर सकते हैं। उसके लिए हमें उपयुक्त संसाधनों की आवश्यकता है। कोरोना के बाद चिकित्सा तंत्र में व्यापक सुधार आया है। लेकिन, जितनी बड़ी हमारी आबादी है और जितना बड़ा हमारा भौगोलिक क्षेत्र है, उसके अनुसार हमें चिकित्सा क्षेत्र में एक व्यापक बदलाव करना पड़ेगा। हमें संसाधन जुटाने पड़ेंगे और डॉक्टर तैयार करने होंगे। सरकार ने नए एम्स खोले हैं। हर जिले में मेडिकल कॉलेज खोलने की योजना है। हर जिले में मेडिकल कॉलेज खोलने के प्रयास पूर्ण होने की दिशा में सरकार गंभीरता से प्रयास कर रही है। आपने जो सुझाव दिया है, उसको हम सरकार तक पहुंचाएंगे। हर मेडिकल कॉलेज के अंदर बढ़ते कैंसर मरीजों के लिए अत्याधुनिक रेडिएशन थेरेपी की मशीनें लगाएं, ताकि बेहतर रूप से उनका इलाज हो सके। इसके लिए हमें व्यापक रूप से काम करने की आवश्यकता है। इसके लिए सरकार ने निजी और सामाजिक संस्थाओं से भी सहयोग लिया है। कई सामाजिक संस्थाएं इस विषय पर काम कर रही हैं। नेशनल कैंसर ग्रिड एक तंत्र के रूप में स्थापित होगा। उससे संपूर्ण देश की जानकारी प्राप्त होगी कि किस राज्य में कैंसर के मरीजों की संख्या बढ़ रही है, हमें कितने संसाधनों की आवश्यकता और कहां पर डॉक्टरों की आवश्यकता है। मुझे लगता है कि हमारे नए डॉक्टर्स नए रिसर्च और नए इनोवेशन के साथ बेहतर काम करेंगे। हम सब कोशिश करेंगे कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक जो सरकार की मंशा है ‘हेल्थ फॉर ऑल’, उस मिशन को पूरा कर पाएंगे। हमारे जितने भी कैंसर के पेशेंट्स हैं, हम उनको बेहतर इलाज देंगे। कुछ इलाज मशीन से होता है और कुछ इलाज मनोविज्ञान से होता है। हमें दोनों को संतुलित बनाते हुए उसके मन और विचार में लड़ने

की क्षमता पैदा करना है। हम लड़कर जीतेंगे, यह आत्मविश्वास भी पैदा करना है। इसमें भी डॉक्टर की बहुत बड़ी भूमिका होनी चाहिए।।

मैं पुन: आपको 42वें नेशनल कांफ्रेंस के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं। आपकी संस्था देश के हित में, जनता के हित में एक समग्र दृष्टिकोण देने का काम कर रही है। हमें कैंसर के होने वाले कारणों के बारे में जनता को बताना है और नये रिसर्च तथा नए इनोवेशन करने की दिशा में आगे बढ़ना है। सरकार भी इस दिशा में काम कर रही है। बीमारी होने के पहले और बीमारी होने के कारणों के रिसर्च पर भी सरकार ने काफी अनुसंधान किया है। अभी और भी अनुसंधान करने का प्रयास कर रही है। उसके साथ समग्र रूप से बेहतरीन इलाज करने का प्रयास भी जारी है। जो मरीज स्वस्थ होकर गए हैं, उनके मॉडल कैंसर पेशेंट को बताकर उनके हौसले को बुलंद करने, उनमें लड़ने की समग्र शक्ति पैदा करने और राष्ट्र के लिए आप एक कर्तव्य के रूप में जो दायित्व निभा रहे हैं, यह हमारी सामूहिकता की ताकत है। अगर हम सामूहिकता के साथ और सब मिलकर काम करेंगे, सब अपने-अपने दायित्वों और कर्तव्यों को निभाएंगे और राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव से काम करेंगे तो हम हर बीमारी का, हर संघर्ष का और हर चुनौती का सामाधान भी करेंगे और सामाधान करते हुए वैश्विक स्तर पर भारत को एक विकसित राष्ट्र भी बनाएंगे। सभी लोग स्वस्थ और कुशल रहें, यह लक्ष्य भी आप जैसे लोगों के प्रयास से ही पूरा होगा।

आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं और बहुत-बहुत बधाई।

(इति)